नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विवि में तीसरे दीक्षांत समारोह पर 15 अक्टूबर को 'जेवण' उत्सव
विविध प्रांतों के लजीज़ व्यंजनों का लिया जा सकेगा स्वाद

वर्धा, 27 सितंबर, 2018; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के तीसरे दीक्षांत समारोह के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ **15 अक्टूबर, 2018** को समता भवन के प्रांगण में 'जेवण' उत्सव (फूड फेस्टिवल) का भव्य आयोजन किया जा रहा है। 'जेवण' उत्सव में देशभर के विभिन्न प्रांतों के लजीज़ व्यंजनों के स्वाद लिये जा सकेंगे। फेस्टिवल में खास आकर्षण है-वर्धा के एच.एन.घोष द्वारा संग्रहित 197 देशों की करेंसी नोट व सिक्कों की प्रदर्शनी,नारायण देशमुख द्वारा चौथी ई. पूर्व की मुद्राएं तथा बहुमूल्य वस्तुओं का संग्रह, राजेंद्र भोयर द्वारा मुगलकालीन ऐतिहासिक सातवाहन काल से मुगलकालीन सिक्केव मुद्राएं।

'जेवण' उत्सव में महाराष्ट्र, बिहार, बंगाल, गुजरात, राजस्थान सहित कई प्रांतों के व्यंजन कला में शौकीन लोगों द्वारा विविध स्टॉल लगाए जा रहे हैं। करीब 50 स्टॉल में देश-विदेश में प्रचलित खाद्य पदार्थों का स्वाद यहां लिया जा सकता है। यहां सस्ते दरों पर चाय से लेकर भोजन तक, बंगाली रसगुल्ला, पूरण पोळी, दाबेली, छोले टिक्की, पुलाव, पावभाजी, सेवई, लिट्टी चोखा, आलू पराठा, गाजर हलवा, शेगांव कचोड़ी, रबड़ी, फलूदा, स्वीटकोर्न, जलेबी आदि और खाना की पूरी थाली-वेज और नॉन वेज दोनों ही प्राप्त कर सकते हैं। 'जेवण' उत्सव में लाजवाब व्यंजन बनाने वाले प्रथम तीन स्टॉल धारकों को प्रोत्साहन स्वरूप प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

'जेवण' उत्सव के संदर्भ मे कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र से पूछने पर उन्होंने बताया कि विविधता भारतीय संस्कृति की पहचान है। यहां भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी, खान-पान की संस्कृति वाले लोग रहते हैं। आज हम चाहें भाषा, नस्ल, संप्रदाय के नाम पर विवाद खड़े करते हों पर स्वाद के नाम पर कभी भी लड़ाई होते नहीं देखी है। उत्तर का समोसा और दक्षिण का डोसा, गुजरात का ढोकला, महाराष्ट्र की पावभाजी और बंगाली रसगुल्ला बहुत से लोगों के बीच लोकप्रिय है। कभी भी दो राज्यों में किसी चीज के स्वाद को लेकर झगड़ा नहीं हुआ, कभी किसी नेता को समोसे या डोसे का बहिष्कार करने का आह्वान करते सुना है?तात्पर्य है कि स्वाद सार्वभौमिक है। अगर भूख हमारे कर्म का पहला पायदान है तो दूसरा पायदान बेशक़ स्वाद ही है।

'जेवण' उत्सव के संयोजक डॉ.अमित विश्वास ने बताया कि कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र और प्रतिकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा की अभिप्रेरणा से'जेवण' उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। 'जेवण' उत्सव का यह छठवां आयोजन है जो कि सांस्कृतिक एकता और सौहार्द का परिचायक है। विश्वविद्यालय के समस्त कर्मियों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों के भोजन की व्यवस्था फूड कूपन प्रदान कर की गई है। फूड कूपन का उपयोग 'जेवण' उत्सव के दौरान किया जाएगा।'जेवण' उत्सव में स्टॉल लगाने के लिए पंजीयन किया जा रहा है। एफएसएसएआई लाइसेंसधारी व्यंजनकला में निपुण व्यक्ति सौ रुपये का पंजीयन शुल्क जमा कर पंजीयन करा सकता है। पंजीयन हेतु 'जेवण' उत्सव : संयोजक के कार्यालय (कक्ष सं. 1, समता भवन, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय) में और मो. 9970244359 पर संपर्क किया जा सकता है।

हिंदी विद्यापीठात तीस-या दीक्षांत समारोहात 15 ऑक्टोबरला 'जेवण' उत्सव
विविध प्रांतांतील लजीज़ व्यंजनांचे स्वाद घेतल्या जाईल

वर्धा, 27 सप्टेंबर, 2018: महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात तीस-या दीक्षांत समारंभाच्या निमित्ताने आयोजित विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमां सोबत **15 ऑक्टोबर, 2018** रोजी समता भवनाच्या प्रांगणात 'जेवण' उत्सवाचे (फूड फेस्टिवल) आयोजन करण्यात येत आहे. 'जेवण' उत्सवामध्ये देशभरातील विविध प्रांतातील व्यंजनाचा स्वाद घेतल्या जाईल. वर्धेचे एच.एन.घोष द्वारा संग्रहित 197 देशांतील करेंसी नोट व शिक्यांचे प्रदर्शन, नारायण देशमुख द्वारा मुद्रा व बहुमूल्य वस्तुचा संग्रह, राजेंद्र भोयर द्वारा मुगलकालीन ऐतिहासिक सातवाहन काळापासूनच्या शिक्के आणि मुद्रा यांचे प्रदर्शन हे या फेस्टिवलमचे खास आकर्षण असणार आहे.

‘जेवण’ उत्सवात महाराष्ट्र, बिहार, बंगाल, गुजरात, राजस्थान इत्यादी प्रातांतील व्यंजन कलामध्ये इच्छूक लोकांकडून विविध स्टॉल लावण्यात येत आहे. जवळपास 50 स्टॉल मधून देश-विदेशातील प्रचलित खाद्य पदार्थांचा स्वाद घेतल्या जाईल. बंगाली रसगुल्ला, पूरण पोळी, दाबेली, छोले टिक्की, पुलाव, पावभाजी, सेवई, लिट्टी चोखा, आलू पराठा, गाजर हलवा, शेगांव कचोड़ी, रबड़ी, फलूदा, स्वीटकोर्न, जलेबी इत्यादी उपलब्ध असेल. ‘जेवण’उत्सवामध्ये उत्कृष्ट भोजन बनवणा-यांना पुरस्कार ही देण्यात येतील.

‘जेवण’ उत्सवाच्या संदर्भात कुलगुरू प्रो. गिरीश्वर मिश्र म्हणाले की विविधता ही भारतीय संस्कृतीची ओळख आहे. इथे भिन्न भाषा-भाषी, खान-पान आणि संस्कृतीचे लोक राहतात. उत्तरेकडील समोसा व दक्षिणचा दोसा, गुजरातचा ढोकळा, महाराष्ट्राची पावभाजी आणि बंगाली रसगुल्ला हे पदार्थ अत्यंत लोकप्रिय आहेत. जेवण हा मुळात मराठी शब्द या उत्वाला देण्यात आला असून महाराष्ट्राच्या संस्कृतीची खास झलक यातून दिसणार आहे, असेही ते म्हणाले.

‘जेवण’ उत्सवाचे संयोजक डॉ.अमित विश्वास यांनी सांगितले की कुलगुरू प्रो. गिरीश्वर मिश्र आणि प्रकुलगुरू प्रो.आनंद वर्धन शर्मा यांच्या निर्देशनात ‘जेवण’ उत्सवाचे आयोजन करण्यात येत आहे. उत्सवाचे हे सहावे वर्ष आहे. विश्वविद्यालयातील कर्मचारी, विद्यार्थी यांना कूपन देण्यात येणार आहे. ‘जेवण’ उत्सवात स्टॉल लावण्यासाठी नोंदणी करणे सुरू असून एफएसएसएआई परवानाधारक शंभर रुपये देवून नोंदणी करू शकतात.अधिक माहितीकरिता कक्ष सं. 1, समता भवन,महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, मो. 9970244359 वर संपर्क करता येईल.

##########

माननीय संपादक/संवाददाता
महोदय, कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।
धन्यवाद।